आधुनिक हिंदी उपन्यासों में शहरी जीवन और नारी की छवि

डॉ. चित्रा स्वामी अवस्थी
पूर्व प्रवक्ता व हिन्दी विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
सी.टी.टी.ई कॉलेज, चेन्नई
तमिलनाडु

शोध-सारांश

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में शहरी महिलाओं का चित्रण विकासशील सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाता है और शहरी परिवेश में महिलाओं के संघर्ष और विजय को उजागर करता है। यथार्थवाद और प्रगतिशील विचारों से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य महिलाओं को गतिशील व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करता है, जो पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देती हैं और अपनी पहचान को फिर से परिभाषित करती हैं। यह शोध-पत्र यशपाल द्वारा लिखित 'झूठा सच' और भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'बसंती' जैसी प्रसिद्ध कृतियों में शहरी महिलाओं के चित्रण की जांच करता है। झूठा सच में, तारा एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाली और लचीली पात्र के रूप में उभरती है, जो सामाजिक अपेक्षाओं, वैवाहिक चुनौतियों और व्यक्तिगत आघात को उल्लेखनीय दृढ़ता के साथ पार करती है। इसी तरह, बसंती में, नाममात्र का पात्र दमनकारी पितृसत्तात्मक संरचनाओं की अवहेलना और झुग्गी-झोपड़ी के जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बीच आत्म-सम्मान और स्वायत्तता की अथक खोज का प्रतीक है। ये कथाएँ शहरी महिलाओं की बहुआयामी भूमिकाओं को प्रदर्शित करती हैं - गृहिणी और मज़दूर होने से लेकर सशक्त, आत्मनिर्भर व्यक्तियों के रूप में उभरने तक। अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे ये महिलाएँ तेज़ी से बदलते शहरी परिवेश में अपने लिए जगह बनाते हुए सामाजिक-आर्थिक विषमताओं, घरेलू हिंसा और पहचान के संकटों का सामना करती हैं। इस तरह के चित्रण के माध्यम से, आधुनिक हिंदी उपन्यास शहरी भारत में महिलाओं की लैंगिक गतिशीलता और परिवर्तनकारी यात्रा की गहरी समझ में योगदान करते हैं।

बीज शब्द

1. शहरी महिलाएँ 2. आधुनिक हिंदी उपन्यास 3. लैंगिक गतिशीलता 4. यशपाल 5. भीष्म साहनी

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी उपन्यासों ने शहरी परिवेश में महिलाओं की उभरती छवि को स्पष्ट रूप से दर्शाया है, जो समय के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है। साहित्य, समाज का दर्पण होने के नाते, मानवीय भावनाओं, मूल्यों और सामाजिक गतिशीलता के धागों को जटिल रूप से बुनता है। शहरी कथाओं में, महिलाओं का चित्रण पारंपरिक सीमाओं को पार करता है, उन्हें गतिशील, स्वतंत्र और लचीला व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करता है। आधुनिकता और शहरीकरण के आगमन के साथ, महिलाएँ घरेलू बंधनों से उभरकर शैक्षिक, व्यावसायिक और सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगी हैं।

यशपाल, भीष्म साहनी और मैत्रेयी पुष्पा जैसे प्रमुख हिंदी उपन्यासकारों ने शहरी महिलाओं के जीवन की जटिलताओं को प्रदर्शित किया है, उनके संघर्षों, आकांक्षाओं और विजयों पर प्रकाश डाला है। चाहे यशपाल की "झूठा-सच" हो, जिसमें तारा सामाजिक मानदंडों से लड़ती है, या भीष्म साहनी की "बसंती", जिसमें हाशिए पर पड़ी महिला की अदम्य भावना को दर्शाया गया है - आधुनिक हिंदी उपन्यासों में बहुआयामी शहरी महिला को

चुनौतियों से जूझते हुए अपनी पहचान को फिर से परिभाषित करते हुए दिखाया गया है। ये कथाएँ लगातार बदलते शहरी परिवेश में महिलाओं के अधीनता से सशक्तिकरण की ओर संक्रमण को रेखांकित करती हैं।

मूल-शोध

साहित्य जीवन से सम्बद्ध है और जीवन मानवजनित मूल्यों का समन्वित रूप है। साहित्य की सभी विधाएँ किसी-न-किसी रूप में जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति ही संदर्शित होती है। साहित्य मानव समाज की भावात्मक स्थिति और गतिशील चेतना की अभिव्यक्ति है। इसी गतिशील चेतना का ही परिणाम है कि हमारे समक्ष नीति-रीति, आदर्श, आचरण, रहन-सहन और परम्परा के प्रतिमान हमेशा बदलते रहते हैं। बदलाव की इस स्थिति का प्रभाव राजनीति, समाज, धर्म, कानून एवं संस्कृति सभी पर समान रूप से पड़ता है। जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदलती जाती हैं, वैसे-वैसे जीवन-मूल्यों, परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों, रूढ़ि यों, आदर्शों और व्यवहारों में भी व्यापक बदलाव आता रहता है।

भारत में सर्वदा ही नारी-शक्ति को सम्मान दिया जाता रहा है। उसे जन-मानस आदि-शक्ति का रूप भी मानते हैं। समय-समय पर उनकी पूजा भी करते हैं। मगर समाज में एक ऐसा विशेष वर्ग भी है, जिसने नारी को दलित वर्ग में रखा है, जिसे उसने उपभोग की वस्तु माना है। सदा ही दासी के रूप में देखा है। व्यक्ति जिस महिला की कोख से जन्म लेता है, उसी कोख को कलंकित करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाता। दूसरी ओर न्याय-अन्याय, दु:ख-सुख, नीति-अनिति, मान-अपमान, धर्म-जाति, झूठ-फरेब आदि अनेक विधाओं से गुज़रते हुए नारी अपना अस्तित्व बचाती रही है। पर आज समय बदल गया है। नारी अपना अस्तित्व भी बचाती है और इन सब सामाजिक विडम्बनाओं का सामना भी करती है, क्योंकि धीरे-धीरे सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में जैसे-जैसे परिवर्तन होता गया, वैसे-वैसे नारी के जीवन में सुधार भी होता गया। यह सुधार हमें शहरी जीवन में अधिक दिखाई पड़ता है। स्त्री शिक्षा पाने लगी, घर की चारदिवारी की कैद से निकल कर पर्दों को झटक कर अपने पैरों पर खड़ी होने लगी। उसके जीवन में आर्थिक सुधार तो हुआ ही। साथ ही वह परिवार में, समाज में, देश में सम्मान भी पाने लगी। पर इसके लिए उसे अथक परिश्रम करना पड़ा, अपमानित भी होना पड़ा पर उसके फलस्वरूप अब वह उस दलित वर्ग से बाहर आ गई है। अब वह अबला नहीं, सबला है। अब वह परिवार में दासी नहीं रही, बल्कि पुरुष के साथ-साथ, बराबर परिवार में असका हाथ बटाने लगी है।

नारी की यह परिवर्तित छवि को आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों ने हमें अपनी रचनाओं में भी दिखाने का सफल प्रयास किया है। प्रेमचन्दोत्तर काल के अपन्यासकारों ने विधवा जीवन के प्रश्न, प्रेम, प्रेम-विवाह, दाम्पत्य जीवन का अटूट प्यार और नारी पतिकृत्य भावनाओं जैसे विषयों को गहनता से प्रस्तुत किया है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में वर्णित शहरी जीवन में नारी की छवि को विख्यात आधुनिक उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यासों में चित्रित करने का प्रयत्न किया है। शहरी जीवन में पली-बढ़ी नारी अथवा महिलाएँ, ज़रूरी नहीं कि वे पढ़ी-लिखी, उच्च स्तर की नारियाँ ही हों, वे कम पढ़ी-लिखी वघरेलू स्त्रियाँ भी हो सकती हैं। वे काम-काजी स्त्रियाँ भी और मज़दूर वर्ग की नारियाँ भी हो सकती हैं। घर में रहने वाली भी और सरकारों में बंधी हुई महिलाएँ भी, आधुनिक और दुस्साहसी भी हो सकती हैं।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासकार यशपाल जी एक युग प्रवर्तक एवं महान साहित्यकार थे। वे परम्परावादी लेखक नहीं थे, जो पिटी हुई रेखाओं पर चलकर रचना करते। यशपाल किसी भी प्राचीन आदर्शवादी विचारधारा में विश्वास नहीं करते थे। उनके साहित्य में आदर्शवाद नहीं, घोर यथार्थवाद मिलता है। यशपाल के "झूठा-सच" उपन्यास में मध्यवर्ग की समस्याओं का सजीव अंकन हुआ है। तारा इस उपन्यास की मुख्य पात्र है। 'तारा' और 'जयदेव' दोनों ही जीवन में प्रगतिशील दृष्टिकोण रखते हैं। तारा की पढ़ाई ब्रह्म-समाज कॉलेज में होती है, जहाँ साम्प्रदायिक, सामाजिक रूढ़ीवाद कोई अर्थ नहीं रखता। वहाँ सभी छात्र साथ में मिलकर भोजन करते थे। तारा की

आरम्भिक अवस्था निम्न पक्तियों में दृष्टव्य होती है। **"इससे पूर्व किसी लड़के से बात करना, वह निन्दा का कारण समझती थी। अपनी गली में पिता जी और गली के लोगों के लिहाज़ से अपना व्यवहार बहुत कुछ पूर्ववत बनाए रखती थी"** [1]

"तरा लड़कियों को घूरने और छेड़ने वाले लड़कों को पसन्द नहीं करती थी। उसे अनायास और कोमल व्यवहार करने वाले लड़के ही अच्छे लगते थे।" [2]

तारा एक पुरोगामी और दूरदृष्टि-सम्पन्न युवती थी। तारा पढ़-लिखकर अपने विवेक से जीवन-साथी का चुनाव करना चाहती है, किन्तु उसके पिताजी रामलुभाय, अपनी गरीबी के कारण एक दुहाजू लड़के सोमराज से कर देता है, परन्तु वह विवाह विवाह जैसा नहीं रहा। यहाँ नौकर और तारा का वार्तालाप से यह स्पष्ट हो जाता है- "आप सोमराज की पत्नी हैं, क्या यह सच है।" जिसके उत्तर में तारा निर्भीकता से कहती है-"यह केवल झूठा-सच है।" वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। अविवाहित जीवन का सूनापन, निराश कल्पना तथा विवाहित जीवन की उलझनों को तारा जौसी प्रमुख पात्र के भीतर गहराई से जांचा गया है। 'झूठा सच' में तारा एक शहर में पैदा हुई है। वहीं उसका पालन-पोषण हुआ। **"तारा अभी विवाह न कर एम.ए. तक पढ़ना चाहती थी। परंतु घरवालों ने उसकी एक न सुनी और सोमराज के साथ सगाई पक्की कर दी।"** [3]

तारा के पात्र में एक संस्कारी परिवार की लड़की एक अध्यवसायी लड़की, साहसी, निर्मीक लड़की, करुणाशील महिला जैसे रूप उजागर हुए हैं, किन्तु तारा की संवेदना की वास्तविक पहचान उसके अद्भुत नारी-साहस तथा जिजीविषा में छिपी है। यदि तारा सोमराज से विवाह का विरोध न करती, दंगे के दौरान साहस के साथ सोमराज के घर से पलायन न करती, शरणार्थी कैंप में स्वयं को समायोजित न करती? दिल्ली आकर मिली हुई नौकरी न अपनाती, तो उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व खुल कर कभी सामने न आता। तारा जीवन भर यातना सहती है। जिससे वह प्रेम करती है उससे विवाह न हो कर एक दुहाजू से उसका विवाह हो जाता है। जो उसे विवाह की प्रथम रात्रि में ही उसे अपमानित करता है, गाली देता है और उसके साथ मारपीट भी करता है। यहीं से तारा की परीक्षा की घड़ी की शुरुआत होती है- एक के बाद एक, उसे जीवन के कटु अनुभव होते हैं। उसका बलातकार होता है, उस पर धर्मांतरण के लिए दबाव डाला जाता है। अपने बचाव के लिए असे छज्जे से भभी कूदना पड़ता है। जब वह काफी चोट खा जाती है। कूर और अत्याचारी लोगों के हाथ बेची भी जाती है, परन्तु तारा हार नहीं मानती है। वह शहर में पली एक सबला नारी है, जो अन्त में शरणार्थी शिविर में भेज दी जाती है जहाँ वह एक सशक्त नारी की भूमिका निभाती है। वह प्रतिभाशाली नारी की तरह समझौता करने के भी पोछे नहीं हटती। असने जीवन से कभी हार मानकर समझौता नहीं किया।

हिन्दी साहित्य जगत में भीष्म साहनी एक महान अनुमिक उपन्यासकार माने जाते हैं। भीष्म सहनी प्रगतिवादी आंदोलन को विस्तार और व्यापकता देने वाले लेखक के रूप में विख्यात हैं। साहित्य के क्षेत्र में आपके केवल सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। जिनमें से शोध कार्य के लिए 'बसंती' और 'नीलू नीलिमा नीलोफर' दो उपन्यास लिए गए हैं।

'बसंती' उपन्यास भीष्म साहनी का चरित्र प्रधान उपन्यास है जिसमें एक चरित्र के बहाने समाज के ऐसे दलित वर्ग का चित्रण हुआ है, जो महानगर के हाशिये पर रोज़ बनने उजड़ने की प्रक्रिया में दर-बदर भटकता है। वह चरित्र है 'बसंती' जो एक अलहड़ किशोरी, भरपूर जिजीविषा से भरी हुई ऐसी चंचल सरिता से हंसती इठलाती चलती है कि अपने समाज के बंधनों, मर्यादाओं और नैतिकताओं की धज्जियाँ उड़ाती एक स्वतन्त्र जीवन बनाती है। यह कठिनाइयों के साथ निरन्तर 'बड़ी' होती जाती है। सूरज पालीवाल के अनुसार **"बसंती का संघर्ष एक स्त्री का संघर्ष है, ऐसी स्त्री का जिसने बचपन से ही उपेक्षा और अभाव देखे हैं। उसकी बड़ी बहन को आठ**

सौ रुपये में बेचा जा चुका है और उसका सौदा भी बुलाकी दर्ज़ी से बारह सौ रुपये में तय कर दिया है। लंगड़े बुलाकी की उम्र उसके पिता से भी अधिक है।" [4]

इस चरित्र के माध्यम से लेखक ने राजस्थान से आए इन परिवारों के दिल्ली महानगर की झुगगी-झोपड़ियों में बनते समाज का सामाजिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। दिल्ली में एक के बाद एक बनते गए दिल्ली के पार्श्व में उनकी बस्तियाँ बसती जाती हैं, उनके झोंपड़े पक्के होते जाते हैं। इनके समाज में परिवर्तन आता है। उनकी स्त्रियाँ मज़दूरी छोड़ कर रमेश नगर के घरों में चौका-बर्तन साफ करने का काम करने लगती हैं। इनके मर्दों के रहन-सहन में भी उन्नति होती है, वे सब शहरी-जीवन जीने लगते हैं। इसी परिवार की एक बेटी बसंती है जिसका 14 वर्ष की होते-होते अपने पिता द्वारा एक 60 साल के बूढ़े के हाथ बेचा जाना, बसंती का इस स्थिति का विद्रोह और मनचाहे साची दीनू के साथ भागना, फिर दीनू द्वारा धोखा देकर अपनी पहली पत्नी के पास जाकर फिर वापस आना - ये सब विवरण सूक्ष्म निरीक्षण के साथ चित्रित हुए हैं और शहर में इस समाज का प्रमाणिक चित्रण दिखाई पड़ता है। जिनमें बसंती के चरित्र की चंचलता तथा उसकी अदम्य जिजीविषा एक उस नारी की छवि को दिखाता है, जो मज़दूर वर्ग से सम्बन्ध रखता। वही मज़दूर वर्ग शहरी जीवन से प्रभावित है, क्योंकि इस उपन्यास में आधुनिक औद्योगिक नगरीय सभ्यता का रूप चित्रित हुआ है। इस सभ्यता का अर्थ है शहरी सभ्यता का विकास। इस शहरी विकास के लिए उनकी बस्ती पर बुलडोज़र चला दिया जाता है। युगों से चली आ रही उनकी संस्कृति को नष्ट कर दिया गया। देखते ही देखते सारे इलाके में भगदड़ मच जाती है। इस भगदड़ में अपने माँ-बाप को रोते-कलपते भागते दीन दशा को देखकर, 'बसंती' की अल्हड़ विद्रोही युवती में से एक वह नारी जाग उठती है, जिसकी आँखे अपने माँ-बाप के लिए आँसू भर आते हैं। पुलिस वाले उसके तंदूर को भी तोड़कर उसकी जीविका का साधन ही तोड़ डालते हैं।

तब भी वह हार नहीं मानती। श्यामा बीबी के पूछने पर-"अब क्या करेगी, पगली? कहाँ जायगी?" पर बिना किसी दु:ख के कहती है-"क्यों बीबी जी, पीछे मेरी कोठरी है, पास में पप्पू है।" स्पष्ट है 'बसंती' में चित्रित नारी, शहरी जीवन के एस मज़दूर वर्ग की नारी का परिचय देती है।

भीष्म सहानी का एक और उपन्यास - 'नीलू नीलम नीलोफर' नारी प्रधान उपन्यास है। इसमें उन दो युवतियों की कथा है, जिनका नाम 'नीलम और नीलोफर है, परंतु घर में दोनों ही 'नीलू' नाम से पुकारी जाती हैं। ये दोनों युवतियाँ दो अलग-अलग धर्म की हैं- नीलोफर मुस्लिम परिवार की है, जबकि नीलम हिन्दू। 'नीलू' नाम से पुकारी जाने वाली दोनों नारियाँ धर्म के विषय में काफी उदार हैं। दोनों ही साम्प्रदायिक भावना से दूर है। यही कारण है कि इस्लाम धर्म की नारी नीलोफर एक हिन्दू चित्रकार 'सुधीर' से प्रेम करती है और नीलम 'अल्ताफ' से जो इस्लाम धर्म को मानता है। नीलोफर के पिता के इस कथन से धर्म के प्रति उनकी उदारता स्पष्ट दृष्टव्य होती है। वह कहते हैं-**"नीलिमा के रहन-सहन पर मैं पाबंदियाँ नहीं लगा सकता। ज़िन्दगी भर के अपने विश्वासों अकीदों को छोड नहीं सकता। नीलिमा को पूरी आज़ादी है, वह अपने मित्र खुद चुने, उसे केवल सावधान करते रहना मेरा कर्तव्य है, पर मैं उस पर हुक्म नहीं चलाऊँगा।"** [5]

चित्रकार सुधीर नीलोफर से विवाह कर लेता है और अपने घर ले जाता है। फिर एक परिचित गणेश जी को घर ले जाता है। शहर में पैदा हुई शहरी पालन-पोशन में पला, साम्प्रदायिक अन्तर को मिटाने वाली नारी नीलोफर को संस्कारगत प्रतिरोध झेलना पड़ता है। चाहे वह गणेश की पत्नी के ताने हों, या सुधीर की माँ द्वारा रसोई से दूर रहने की हिदायत। नीलोफर तथा सुधीर के प्रणय संबंधों में बाधा धर्म की है। धर्म के नाम पर नीलोफर के प्रेम का गला घोंट दिया जाता है। उसका भाई घोखे से उपने जायज़ बच्चे का गर्भपात करा देता है।

नीलोफर पर जब घर वाले ज़ुल्म बहुत अधिक बढ़ जाता है, तो सुधीर इस्लाम धर्म स्वीकार करने को तैयार हो जाता है, परन्तु नीलोफर को यह स्वीकार नहीं। वह किसी भी स्थिति में सुधीर का धर्म परिवर्तन नहीं

चाहती। उसने जिस रूप में सुधीर को प्रेम किया था, उसी रूप में उसकी जीवन-संगनी बने रहना चाहता है। यह एक नारी की शक्ति है, जो अन्याय के सामने झुकना स्वीकार नहीं कर सकती।

परंतु नीलिमा इसके विपरीत स्वभाव की नारी थी। वह भी दूसरे धर्म अर्थात मुस्लिम लड़के अल्ताफ से प्रेम करती है, उसके पिता भी इतने उदार हैं कि पुत्री की खुशी के लिए उसका विवाह अल्ताफ से करा देते, परन्तु इसके बदले में उसके पिता को अपने परिवार वालों की बातें सुननी पड़ती और उनके क्रोध का भाजन बनना पड़ता, जो नीलिमा को स्वीकार नहीं है। और वह सुबोध से विवाह कर लेती है। पर अपने ही धर्म-जाति के सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त समझे जाने वाले 'सुबोध' के साथ क्या नीलिमा खुश रहती है, नहीं, बल्कि वह बात-बात पर अपमानित होती है। सम्भ्रांत और सुख-सुविधा में पली नीलिमा आप को कसाई के हाथों मरने वाली मुर्गी समझती है। वह इस जीवन से अच्छा मौत को समझती है और आत्महत्या करने का प्रयत्न करती है।

अंत में संघर्ष करती हुई नीलिमा अपने खोए हुए आत्मविश्वास को दुबारा पाकर सोचती है-"कौन जाने किसी दिन मैं भी हँसने चहकने लगूँ।" वह निराशावादी नारी नहीं है, उसे अपनी आत्मा पर विश्वास है कि एक दिन वह सुखी जीवन अवश्य पाएगी।

भीष्म साहनी की कहानी के ये दोनों पात्र आत्मविश्वासी, सहासी, विद्रोही, त्यागमयी और धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करने वाली महान नारियाँ हैं।

दूसरी ओर 'मैत्रेयी पुष्पा' के उपन्यासों में सर्वाधिक देह-शोषण की घटनाएँ होती दिखाई देती हैं। उनके उपन्यासों के आधार पर "नारी रात की संगनी है, शय्या का अलंकार; बिस्तर की जगमगाहट है। स्त्री के पास पुरुष क्रीड़ा के लिए आता है। स्त्री की कोई दूसरी उपयोगिता नहीं है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में तो नारी को देखकर वासना के भूखे भेड़ियों ने पवित्र रिश्तों को भी तार-तार कर दिया, परन्तु इस अन्याय और अपमान 'इदन्नम' उपन्यास की नारी पात्र सुगना अपने को समाप्त कर देती है पर उसके पहले वह उस क्रेशर मालिक को चाकु से गोद-गोद कर खत्म कर देती है और अपने सहास का परिचय देती है।

जहाँ मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी के बहुविध शोषण का रूप उजागर हुआ है, वहीं उसकी आकांशाओं को भी बेबाक ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान हुई है। उनके नारी पात्र ने बदलती युगीन परिस्थितियों के अनुरूप नैतिकता, आदर्श और आपसी सम्बन्धों के लिए प्रतिमान दिखाई पड़ते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में शहरी परिवेश की महिलाओं का चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के व्यापक परिवर्तन को भी दर्शाता है। इन उपन्यासों ने महिलाओं के जीवन में आए बदलावों को उनकी स्वतंत्रता, शिक्षा और सामाजिक भूमिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साहित्यकारों ने महिलाओं की संघर्षशीलता, उनकी पहचान के लिए किए गए प्रयासों और पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देने की उनकी क्षमता को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उकेरा है।

जहाँ यशपाल के उपन्यास में तारा जैसे पात्रों के माध्यम से महिलाओं के आत्मनिर्भरता के "सच-झूठा" संघर्ष को दिखायागया है, वहीं भीष्म साहनी के में निम्न वर्ग की महिला की कठिनाइयों और अदम्य "बसंती" जिजीविषा का चित्रण किया गया है। ये रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि महिलाओं की भूमिका समाज में केवल पारंपरिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वे अपनी पहचान बनाने और समाज को नई दिशा देने में सक्षम हैं।

अतः, हिंदी उपन्यासों में शहरी महिलाओं का यह चित्रण हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार साहित्य समाज के बदलावों का अभिलेख है। यह साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध और सामाजिक दृष्टि से प्रेरणादायक है, जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए प्रासंगिक है।

ISSN : 2583-2948

❑❑❑

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यशपाल, झूठा सच, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं-112
2. यशपाल और उसका झूठा सच, आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या, राजनाथ शर्मा, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ सं- 56
3. यशपाल और उसका झूठा सच, आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या, राजनाथ शर्मा, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ सं- 56
4. सूरज पालीवाल, सं. डॉ. नामवर सिंह, आलोचना, त्रैमासिक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 17-18, वर्ष- 2004, पृष्ठ सं- 132
5. नीलू नीलम नीलोफर, भीष्म सहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं- 78